स्नातक प्रथम खण्ड(पत्र–प्रथम)

डॉ0 गौतम कुमार

अतिथि शिक्षक

राजनीति विज्ञान विभाग

आचार्य नरेन्द्र देव महाविद्यालय, शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

राजनीतिक सिद्वांत की प्रकृति(Nature of Political Theory)

जब से राज्य का स्वरूप लोककल्याणकारी हुआ है तब से राजनीतिक सिद्वांत की प्रकृति में परिवर्त्तनशीलता देखी जा रही है। राजनीति विज्ञान का केन्द्रीय विषय–वस्तु "राज्य" की बदलती हुई आवधारणा के साथ–साथ राजनीतिक चिन्तकों की अध्ययन की पद्वति में बदलाव आया है। सिद्वांत की प्रकृति में परिवर्तनशीलता के कारण ही इसे परम्परागत और आधुनिक राजनीतिक सिद्वांत में विभाजित किया गया है।

परम्परागत राजनीतिक सिद्वांत की प्रकृति – परम्परागत राजनीतिक सिद्वांत में दार्शनिक पहलू पर ज्यादा जोर तथा आधुनिक वैज्ञानिक पद्वतियों को नजरअन्दाज किया गया है। परिवर्तन के लिए उत्तरदायी तत्वों पर कोई ध्यान नहीं दिया गया है। परम्परागत राजनीतिक सिद्वांत की प्रकृति औपचारिक व संस्थागत अध्ययन से जुड़ी हुई है। इसमें राजनीतिक संस्थाओं की उत्पत्ति, स्वरूप, प्रकृति, कार्य क्षेत्र उसके विषय वस्तु रहे हैं। उदाहरण के तौर पर प्लेटो ने अपनी रचना Republic में "आदर्श राज्य" को अपने सिद्वांत का विषय बनाया है और उसके शिष्य अरस्तु ने अपनी रचना Politics में "नगर राज्य" की ही व्याख्या की है। बाद के विद्वानों यथा–डायसी, लास्की, ऑग व जिंक के द्वारा भी संस्थाओं के औपचारिक एवं कानूनी स्वरूप पर बल दिया है।

परम्परागत राजनीतिक सिद्वांत की प्रकृति वर्णात्मक पद्वति पर आधारित है जबकि विश्लेषणात्मक पद्वति को नजदअंदाज किया गया है साथ ही इसके अन्तर्गत आदर्शात्मक पद्वति जिसमें धर्म, दर्शन, नैतिकता का विशेष प्रभाव देखने को मिलता है। अन्त में परम्परागत राजनीतिक सिद्वांत मुख्यतः मूल्यों एवं लक्ष्यों से जुड़ा हुआ है। इसके विषयों के

अन्तर्गत राज्य व सरकार की उत्पत्ति, विकास, संगठन, विभिन्न प्रकार के राजनीतिक दल, राजनीतिक विचारधाराएँ, प्रमुख सरकारों और संविधान का तुलनात्मक अध्ययन, अर्न्तराष्ट्रीय संबंध, राष्ट्रीय प्रशासन है।

आधुनिक राजनीतिक सिद्वांत की प्रकृति – परम्परागत सिद्वांत की प्रकृति मसलन, औपचारिक, संस्थागत, वर्णनात्मक, आदर्शात्मक, तार्किक, कानूनी दृष्टिकोण के प्रतिक्रिया स्वरूप आधुनिक राजनीतिक सिद्वांत का उदय हुआ। इसमें आधुनिक विचारकों के द्वारा नवीन पद्वति वैज्ञानिक पद्वति पर बल दिया। यहॉ औपचारिक संस्थाओं के विवेचन के स्थान पर अनौपचारिक तत्वों पर बल, इसमें संस्थाओं के संरचनात्मक अध्ययन के स्थान पर क्रियात्मक या कार्यात्मक अध्ययन पर बल दिया जाता है। नवीन दृष्टिवादियों में हैरोल्ड लासवेल तथा चाल्स मैरियम की शक्ति उपागम, पैरोटा, मोस्का और मिचेल्स की विशिष्ट वर्गीय सिद्वांत, डेविड ईस्टन का व्यवस्था विश्लेषण उपागम, संरचनात्मक कार्यात्मक उपागम आदि प्रमुख है। आधुनिक राजनीतिक सिद्वांत में विश्लेषण की महत्ता है एवं आनुभाविक पद्वतियों पर विशेष बल दिया गया है। आनुभाविकता व वस्तुनिष्ठता तो इसकी प्रमुख विशेषता है। इसमें नैतिकता पर भी अधिक बल दिया गया है। इसमें मूल्यविहीन विश्लेषण की पद्वति को अपनाया गया है तथा इसके विचारक मूल्यों और आर्दशों को पूर्णतः अस्वीकार करते हैं।

परम्परागत और आधुनिक राजनीतिक सिद्वांत की प्रकृति में काफी अन्तर देखने को मिलता है। दोनों में से एक की प्रकृति व अध्ययन पद्वति को उचित नहीं माना जा सकता है। परम्परागत राजनीतिक सिद्वांत के द्वारा कानून, नैतिक एवं मूल्य प्रधान पद्वति पर ज्यादा जोर और वैज्ञानिक पद्वतियों को अमहत्वहीन मानना उचित नहीं है साथ ही आधुनिक राजनीतिक सिद्वांत में जिस तरह प्राकृतिक विज्ञान वाली वैज्ञानिकता पर जोर दिया गया है वह भी पूर्णतः उचित नहीं है। राजनीति में नैतिकता और वैज्ञानिकता दोनों आवश्यक है, मूल्य व तथ्य दोनों ही आवश्यक है। अतः राजनीति के बेहतर अध्ययन के लिए हम दोनों सिद्वांतों की विशेषताओं को आधार बनाकर एक समन्वित दृष्टिकोण अपनाना होगा।

राजनीतिक सिद्वांत का महत्व

मानवीय जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति तथा लक्ष्य की प्राप्ति से राजनीतिक सिद्वांत का वास्ता है। मानव की खुशहाली के लिए विभिन्न विचारधाराओं का प्रतिपदान किया जा रहा है। जहॉ तक राजनीतिक सिद्वांत की उपयोगिता और महत्व की बात है तो इसे निम्नलिखित रूपों में स्पष्ट किया जा सकता है –

1. **समस्याओं के समाधान में सहायक(Solving the Problems)** – राजनीतिक सिद्वांत की उपयोगिता राजनीतिक समस्याओं के समाधान से जुड़ी हुई है। एक राजनीतिक चिन्तक परिस्थितियों का गहन अध्ययन करता है और उस परीक्षण के आधार पर अपना कुछ समाधान प्रस्तुत करता है, जिनसे मानव जीवन यानि सम्पूर्ण व्यवस्था के समस्या के समाधान में सहायता करता है।
2. **आन्दोलन का महत्वपूर्ण कारक(Important Factor in Movement)** – राजनीतिक आन्दोलनों के पीछे सदैव एक विचारधारा का हाथ रहा है। अब तक जितने भी राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय आन्दोलन हुए हैं और समाज में क्रांतियॉ लाई गई, उन सबके पीछे राजनीतिक सिद्वांत की भूमिका ही महत्वपूर्ण रही है। राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में उदारवादी एवं मार्क्सवादी राजनीतिक सिद्वांत की भूमिका रही है। अनुभववादी राजनीतिक सिद्वांत के द्वारा राजनीति विज्ञान में व्यवहारवादी क्रांति लायी गई तो समकालीन राजनीतिक सिद्वांत द्वारा व्यवहारवादी कटट्रता के विरोध में उत्तर व्यवहारवादी को लाया गया।
3. **भविष्य की योजना(Future Plan)** – राजनीतिक सिद्वांत का उद्वेश्य केवल वर्त्तमान परिस्थितियों का समालोचना भरना ही नहीं, बल्कि भविष्य के लिए योजना निर्धारित करना है ताकि एक बेहतर भविष्य का निर्माण हो सके। उदाहरण के तौर पर The Republic में न्याय, शिक्षा और साम्यवादी सिद्वांतों के साथ–साथ अनेक सिद्वांत आर्दश राज्य की परिकल्पना हेतु किया गया है। इसी तरह सकारात्मक उदारवादी चिंतको के द्वारा न्यायपूर्ण समाज के लिए लोककल्याणकारी राज्य की स्थापना में विभिन्न सिद्वांतो का प्रतिपादन किया जाता रहा है।

4. **नवीन धारणाओं का विकास(Development of New Concepts)** – प्रत्येक युग में अलग–अलग परिस्थितियों के अनुसार राजनीतिक विचारक अपनी नई–नई अवधारणाएँ प्रस्तुत करता है। मध्यकालीन युग के पश्चात् बौद्विक जागरण आन्दोलन व औधोगिक क्रांति ने उदारवाद को सामने लाया और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की अवधारणा का जन्म हुआ। उसी प्रकार परम्परागत उदारवादी सिद्वांत के विरोध में समाजवादी और मार्क्सवादी सिद्वांत का उदय हुआ और आर्थिक समानता की आवधारणा का विकास हुआ।
5. **राजनीतिक व्यवस्था का औचित्य प्रमाणित करना(Justify the Political system)** – राजतंत्र, कुलीनतंत्र, लोकतंत्र, तानाशाही जैसी विभिन्न प्रकार की व्यवस्था जिसमें प्रत्येक का खास सिद्वांत एवं उद्वेश्य होता है, इन सिद्वांतों द्वारा हर युग की राजनीतिक व्यवस्था के औचित्य को प्रमाणित करने का प्रयास किया जाता है। उदाहरणार्थ मुसोलनी और हिटलर के द्वारा फासीवाद और नाजीवाद के औचित्य को प्रमाणित करने का प्रयास किया गया।
6. **ज्ञान और चेतना में अभिवृद्वि (Enhancement of knowledge & Consciousness)** – राजनीतिक सिद्वांत से ज्ञान और चेतना में वृद्वि होती है। वास्तव में इसकी वृद्वि से ही मानवीय जीवन में प्रकाश आता है तथा आदर्श समाज और आदर्श राज्य का निर्माण होता है। प्लेटो ने ठीक ही कहा है कि "ज्ञान ही सदगुण है और सदगुण ही ताकत है।" इसके द्वारा हम परिवार, समुदाय, राज्य के साथ–साथ सम्पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय समाज को सौहार्दपूर्ण एवं खुशहाल बना सकते हैं।
7. **घटनाओं और मानवीय मूल्यों में संतुलन (Balance in Events & Human Values)** – राजनीतिक चिंतकों के द्वारा राजनीतिक घटनाओं का विश्लेषण करके, उसका समाधान प्रस्तुत कर घटनाओं और मानवीय मूल्यों में संतुलन स्थापित करने का प्रयास तथा इसमें संतुलन के लिए राजनीतिक सिद्वांतों को अपने स्वरूप में परिवर्तन करना चाहता है।